लोक

परम्परा, पहचान एवं प्रवाह

श्यामसुन्दर दुबे

Scanned with OKEN Scanner

लोक : परम्परा, पहचान एवं प्रवाह

श्यामसुन्दर दुबे

राधाकृष्ण

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-7119-812-2

लोक : परम्परा, पहचान एवं प्रवाह

© श्यामसुन्दर दुबे

पहला संस्करण : 2003
दूसरी आवृत्ति : 2011

मूल्य : ₹ 225

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

आवरण : सोरित

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

LOK : PARAMPARA, PAHACHAN EVAM PRAVAH
by Shyam Sunder Dubey

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

परम्परा

लोक-लय के उत्स	9
लोक-लय के प्रयोग	13
बुन्देलखंड की लोक कथाएँ	20
लोक-नाट्य : परम्परा एवं प्रयोग	28
बुन्देलखंड की स्वाँग परम्परा	38
लोक संस्कृति के सन्दर्भ में मूर्त और अमूर्त की दृष्टि	45

हस्तक्षेप

आधुनिकता और लोक संस्कृति की प्रासंगिकता	53
लोक साहित्य और क्षेत्रीयतावाद	57
लोक पर संस्कृत का प्रभाव तथा उसकी अन्तःक्रियाएँ	63
मानवीय मूल्य और लोक साहित्य	68

अन्तर्सम्बन्ध

बुन्देलखंड की लोक कलाओं का अन्तर्सम्बन्ध	77
बुन्देली लोकगीतों पर संस्कृत परम्परा का प्रभाव	83

साहित्य के लोक सन्दर्भ

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में लोक-तत्त्व	91
रामचरित मानस में लोकदृष्टि	97
भवभूति के साहित्य में लोकचेतना	101

लोक-भावना

लोक देवता शिव	109
लोक संस्कृति और नर्मदा	117

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. श्यामसुन्दर दुबे

जन्म : 12 दिसंबर, 1944

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.

प्रकाशित रचनाएँ : *बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन* (समीक्षा); *कालमृगया, विषाद बाँसुरी की टेर* (ललित निबंध); *दाख़िल खारिज़, मरे न माहुर खाय* (उपन्यास); *जड़ों की ओर* (कहानी संकलन); *रीते खेत में बिजूका, इतने करीब से देखो* (काव्य संकलन); *बुंदेलखंड की लोककथाएँ* (लोक-साहित्य); *डॉ. लक्ष्मीप्रसाद रमा : स्वरूप एवं संवेदना, सार्थक–एक* (संपादन)।

प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में नवगीत, कविता, ललित निबंध, समीक्षात्मक निबंधों, लोक-साहित्य पर केन्द्रित रचनाओं का सतत प्रकाशन। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से अनेक नाटक, संगीत रूपक एवं कार्यक्रमों का प्रसारण।

पुरस्कार एवं सम्मान : *दाख़िल ख़ारिज़* उपन्यास को म.प्र. साहित्य सम्मेलन का वागीश्वरी पुरस्कार, 'विषाद बाँसुरी की टेर' ललित निबंध संकलन को स्वामी प्रणवानंद सरस्वती पुरस्कार, युवा साहित्य सृजन प्रतिस्पर्द्धा के अंतर्गत काव्य एवं निबंध में सर्वोच्च सम्मान।

सम्प्रति : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शासकीय महाविद्यालय, हटा (दमोह), म.प्र.-470 775

Scanned with OKEN Scanner

अपने अतीत की ओर लौटना वर्तमान में अपनी सुरक्षा और गौरव की तलाश का आधार बन सकता है। किन्तु अभी तक यह आश्वस्ति प्राप्त नहीं हो सकी कि हमारा यह लौटना फैशन से हटकर हमारी चेतना के सातत्य का प्रमाण दे सकेगा। खारिज होती हुई नैतिकता तथा आस्थाहीन धर्मदृष्टि के समापन से उत्पन्न शून्य को लोक संस्कृति के असल मानवीय मूल्य ही भर सकते हैं, क्योंकि इन मूल्यों के उद्गम स्रोत मनुष्य और प्रकृति की साझेदारी में खोजे जा सकते हैं। प्रकृति के साथ मनुष्य ने अपने सरोकारों को स्थापित किया था, उनसे ही मानवीय सीमाएँ व्यापक बनी थीं। हमारे पूर्वजों के गीतों, नृत्यों, धार्मिक आयोजनों और संस्कार-समारोहों में प्रकृति अनुपस्थित नहीं रह सकती थी। आज यदि हमें अपनी आधुनिकता में भी अपने मनुष्य की तलाश करनी है तो लोक संस्कृति के चिरनवीन अवदान को अपनी आवश्यकता का अंग बनाना पड़ेगा। लोक संस्कृति का शोषण हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए। जबकि अभी तक यही होता रहा है। हमारी जातीय चेतना के साथ अतिसूक्ष्म धरातलों पर ही अब लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति सम्भव और प्रासंगिक है। हमारा दायित्व इस तरह दोहरा हो जाता है–एक ओर लोक संस्कृति का सही उपयोग तो दूसरी ओर उसकी सुरक्षा। इन दोनों के प्रति सतर्क और सावधान रहकर ही हम लोक संस्कृति को आधुनिक जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में परख सकते हैं और उसे उपयोगी बना सकते हैं। लोक संस्कृति को विकृत कर प्रयोगों और प्रदर्शनों के नाम पर उसका गलत उपयोग कदापि नहीं होना चाहिए।

–इसी पुस्तक से

ISBN : 978-81-7119-812-2
₹ 225
9788171198122

राधाकृष्ण

Scanned with OKEN Scanner